अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 1, (Jan-December 2021)

स्त्री मुक्ति के स्वप्न एवं संघर्ष : परिदृश्य

डॉ. सुनीता, सहायक प्राध्यापक,विभाग हिंदी
राजकीय महिला महाविद्यालय, पाली, रेवाड़ी

वर्तमान हिंदी कहानी के परिदृश्य में स्त्री विमर्श संबंधी कहानियों के कथानकों का विश्लेषण करते हुए यह तथ्य स्वतः सिद्ध हो जाता है कि आज की नारी अबला नहीं। वर्तमान हिंदी कहानी में स्त्री लेखिकाएं अपनी बेहद निजी तथा व्यक्तिगत जिंदगी के अनुभवों का बेबाक वह स्वच्छंद चित्रण कर रही हैं। इन स्त्री कथाकारों का मानना है कि वह उनका स्त्री मुक्ति तथा स्त्री सशक्तीकरण की दिशा में स्त्री-जाति को जागरूक व सचेत करने का प्रयत्न है ताकि वह उनके व्यक्तिगत अनुभवों से अपने जीवन के कुछ अहम फैसले लेने में समर्थ हो सकें। यद्यपि ऐसा करते हुए इन लेखिकाओं को अनेक दिक्कतों का सामना करना पड़ा परंतु स्त्री- विमर्श के तौर पर उनसे ऐसे लेखन की न केवल अपेक्षा की जाती है अपितु ये कथा लेखिकाएं इसे अपना कर्तव्य भी मानती हैं। मन्नू भंडारी की कहानी "स्त्री-सुबोधिनी" इस दृष्टि से महत्वपूर्ण बन पड़ी है। लेखिका ने अपने वैवाहिक जीवन के कटु अनुभवों को बिना किसी लाग लपेट के हजारों बहनों के साथ साझा किया है। लेखिका बड़ी बेबाकी से कहती हैं- प्यारी बहनों, न तो मैं कोई विचारक हूँ, न प्रचारक, न लेखक ,न शिक्षक। मैं तो एक बड़ी मामूली- सी नौकरी पेशा घरेलू औरत हूँ, जो अपनी उम्र के बयालीस साल पार कर चुकी हूँ। लेकिन इस उम्र तक आते-आते जिन स्थितियों से मैं गुजरी हूँ, जैसा अहम अनुभव मैंने पाया... चाहती हूं बिना किसी लाग-लपेट के उसे आपके सामने रखूँ और आपको बहुत सारे खतरों से आगाह कर दूँ। मैं जानती हूं कि अपने जीवन के निहायत ही निजी अनुभवों को यों सरेआम कहकर मैं खुद अपने लिए बहुत बड़ा खतरा मोल लूंगी। मेरे मात्र पाँच साल के अल्पकालीन विवाहित जीवन पर भी संकट आ सकता है। पर क्या करूँ, मेरा नैतिक दायित्व मुझे ललकार रहा है कि अपनी हजार- हजार मासूम किशोरी बहनों को..... जो या तो ऐसी ही स्थिति में पड़ी हैं या कभी भी पड़ सकती हैं..... अपने अनुभव से कुछ नसीहत दूँ, बर्बादी की ओर जाने से बचा लूँ ,खतरा उठाकर भी यदि मैं दो- चार बहनों की..... ।"1 यह एक ऐसी नौकरी पेशा कुंवारी लड़की की कहानी है जो गांव से दूर महानगर में किसी सहारे की तलाश में जुटी है जो , जो विवाह से पहले ही प्रेम जाल में उलझ कर अपना सब कुछ लुटा बैठती है। लेखिका आत्मग्लानि से भर उठती है, वह सोचती है जिस उत्तेजना से वह शिंदे को चाहती है उसकी पत्नी भी उसी शिद्दत से उसे चाहती

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 1, (Jan-December 2021)

होगी। आखिर वह भी तो स्त्री ही है ? विवाह से पूर्व अपने प्रेम संबंधों को इस प्रकार स्वीकार करते हुए लेखिका कहती हैं कि "आपको बहुत गलत लग रहा है न ? लगना ही चाहिए। अब तो मुझे भी लगता है।"2 अपने भीतर की सलवटो को चीरती हुई लेखिका यही स्वीकार करती है।

वर्तमान हिंदी कहानी नारी के इन्हीं सशक्त होते प्रतिरूपों को उद्घाटित करती है। इन कहानियों में नारी ने न केवल अपनी पारिवारिक स्थितियों को सुधारा है अपितु घर की चौहद्दी के बाहर भी हौसले के साथ कदम बढ़ाया है। वह अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाती है और अपने कानूनी अधिकारों को भी जानती है। आज की नारी ने अपनी शक्ति को पहचाना है और अन्याय का प्रतिकार किया है। वह अब अपने पति को परमेश्वर समझकर उसके घिनोनेपन को सहने को अभिशप्त नहीं है अपितु पति से अलग उसका अपना एक अस्तित्व है जिसे वह किसी भी कीमत पर धूमिल नहीं होने देती। इक्कीसवीं सदी में समाज और साहित्य में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। आधुनिकता तथा शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने मानवाधिकारों के प्रति जागृति लाने में अहम भूमिका अदा की है। सामाजिक स्तर पर भेदभाव जहां अस्वीकार्य है वहां दंडनीय अपराध भी है। आधुनिक समाज में जहां नारी के अस्तित्व को मान्यता मिली है वहीं उसे शिक्षा ,स्वास्थ्य ,नौकरी ,व्यवसाय आदि करने में बराबर छूट मिली है, किंतु वह अभी भी पुरुष की दासता से पूर्णरूप से मुक्त नहीं हो पाई है। पुरुष समाज के स्त्री- विषयक दकियानूसी विचार आज भी स्त्री के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा हैं। पुरुष की नजरों में वह आज भी दोयम दर्जे की है, इतना ही नहीं नारी की नैसर्गिक सहनशीलता ने भी उसे ऐसा ही बनाया है। मैत्रयी पुष्पा की चर्चित कहानी "फैसला" स्त्री की चिर-बंदिनी मुक्त छवि को तोड़कर विद्रोह को भास्वरता प्रदान करती है। लेकिन उनकी नायिकाओं का विद्रोह प्रसाद या जैनेंद्र कुमार की स्त्रियों की तरह भारतीय परंपराओं और मूल्यों की रक्षा के उद्योग में आत्म-दमन और आत्मपीड़न में घुल कर नहीं रह जाता बल्कि वह अपनी मानवीय इयत्ता को रोजमर्रा की जिंदगी में पुरुष के समकक्ष प्रमाणित करता चलता है। अज्ञय हिंदी साहित्य के पहले रचनाकार हैं जिन्होंने बिना किसी महिमामंडन और छद्म सहानुभूति के स्त्री को उसकी वास्तविकता -पराधीन और दमित नीयति के साथ जीने की विवशता में- देखा। "गैंग्रीन" कहानी की मालती की तड़फड़ाहट में विद्रोह की सुप्त चिंगारियां दबी हैं | जो प्रवृत्ति स्त्री लेखन में आकर स्त्री-पुरुष संबंधों का एक नया प्रारूप रचती हैं। मैत्रयी पुष्पा अपने समकालीनों और पूर्ववर्ती महिला रचनाकारों से इस अर्थ में भिन्न है कि वे स्त्री सशक्तिकरण की अवधारणा को

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 1, (Jan-December 2021)

घर परिवार की चौहद्दीयों से बाहर निकालकर सामाजिक राजनीतिक सरगर्मियाँ के बीचो-बीच ले जाती है। "फैसला", की वसुमति का विद्रोह सैलाब की तरह अचानक नहीं उमड़ा है ,वह दमन की लंबी श्रृंखला से गुजर कर अपने को बचाने की एक आखरी कोशिश के रूप में फूटा है। वसुमति ग्राम प्रधान है, लेकिन सब तरह के अधिकारों से अछूती। उसकी पहली और अंतिम पहचान है ब्लॉक प्रधान रणवीर की पत्नी होना और एकमात्र दायित्व है घर -गृहस्थी की साज-संभाल। ग्राम बैठकों में जाकर न्याय करना, विकास योजनाओं के लिए आवंटित धनराशि को ग्राम कल्याण कार्यक्रमों में व्यय करना, लड़कियों के लिए शिक्षा और रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराना- वसुमति की योजनाएं उसके सीने में ही दम तोड़ देती हैं क्योंकि ग्राम प्रधान का असली रुतबा और दायित्व उसका पति रणवीर निभा रहा है। वह कठपुतली की तरह उसके इशारों पर दस्तखत कर देने को बाध्य है, बस। अक्सर उसे लगता है कि गडरिया बहू इसुरिया की सेंटी की मार बकरियों के झुंड पर नहीं, उसकी अंतरात्मा पर पड़ रही है। समाज की रग-रग को अपने इशारों पर चलाती पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने पुरुष और सतीत्व की श्रेष्ठता को इतना अधिक महिमामंडित कर दिया है कि वह चाहकर भी खोल तोड़कर बाहर नहीं आ सकती ।वसुमति पूरी कहानी में चुप है, गूंगी आज्ञाकारी पत्नी का मिथ रचती हुई, लेकिन लेखिका ने सांकेतिक ढंग से अनेक शिल्पगत युकक्तियों का प्रयोग करते हुए इसुरिया और हरदेई को उसके अंतर्मन का मुखर प्रतिनिधि बनाया है। तब इसुरिया औऱ हरदेई दो स्त्री पात्र न रहकर स्त्री के भीतर निरंतर द्वंद्वंग्रस्त रहती दो विरोधी ताकतों को प्रतीक बन जाती हैं। विवेशीलता, संवेदना और निस्संगता के साथ हर अन्याय का प्रतिकार करती विद्रोहिनी इसुरिया ने सामाजिक सम्मान भले ही अर्जित न किया हो, लेकिन सामाजिक जकड़नों से मुक्त होकर स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता और गत्यात्मकता को अवश्य अर्जित किया है। यही लैंगिक विभाजन से परे आधुनिक मनुष्य होने की पहचान है।"3निम्न जाति की मुखर इसुरिया भले ही अनपढ़ एवं अशिक्षित नारी है, किंतु वह डरपोक और मूर्ख नहीं है, जब वसुमति चुनाव में जीत जाती है तो वह जानती है कि अब गांव की नारियों पर कोई अत्याचार नहीं कर सकेगा वह संटी उठाकर जोर से बोलने लगी - "ए S S, सब जनी सुनो, सुन लो कान खोलके ! बरोबरी का जमाना आ गया। अब ठठरी बाँधे मरद माराकुटी करें, गाली गर्रोज दें, मायके न भेजें, पीहर से रुपैया पैसा मंगवावें , क्या कहते हैं कै दायजे के पीछे सतावें तो बैन सूधी चली आना बसुमती के ढिंग। लिखवा देना कागद। करवा देना नठुओं को जेहल ।ओ वसुमतिया, ओ तू रनवीरा की तरह

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 1, (Jan-December 2021)

अन्याय तो नहीं करेगी ? कागद दाब तो नहीं लेगी ? सलीगा ने हमारे हाथ-पाँव तोरे, तो हमने लीलों के लड़का से तुरंत कागद लिखवाया था कि सरकार दरबार हमारी गुहार सुने। रनवीर को हमने खुद पकड़ाया था जाकर।"4दूसरी ओर "हरदेई मर्यादा और लोक -लाज के नाम पर सामाजिक जकड़न में फंसी है। वसुमति हरदेई की बुड्ढी अम्मा के बुलाने पर हरदेई को न्याय दिलाने के लिए पंचायत के चबूतरे पर जाती है और पंचों के साथ मिलकर हरदेई को न्याय दिलाने का फैसला करती है। वसुमति को बुड्ढी अम्मा से उसकी बेटी को पति के साथ भेजने का निर्णय करवा हार्दिक प्रसन्नता अनुभव हुई परंतु इस फैसले पर रात को वसुमति को अपने ही पति का कड़ा विरोध भी सहन करना पड़ा। दोनों में खूब कहां सुनी हुई जिसका दबाव अंततः हरदेई की आत्महत्या के रूप में सामने आया। मुक्ति का क्षण सोच -विचार की मोहलत नहीं देता। ब्लॉक प्रमुख के चुनाव में एक बार फिर रणवीर प्रत्याशी है और वसुमति इसुरिया के विद्रोह और हरदेई की पीड़ा में पूरी स्त्री जाति के आँसुओं और प्रत्याशा को गूंथ कर रणवीर के खिलाफ वोट डाल आती है। उसका यह कदम बेहद सांकेतिक है- मुक्त होने की साहसिक लड़ाई का उद्घोष, भगिनीवाद के विस्तार का विश्वास, दलित अस्मिताओ के सशक्तिकरण का मोर्चा। वसुमति की चुप्पी में दिलेरी गूंथकर मैत्रयी पुष्पा जिस नई स्त्री को रचती है, वह राजनीतिक अखाड़े में उतर कर पितृसत्तात्मक व्यवस्था से स्त्री को "मनुष्य" के रूप में देखे जाने की मांग करती है क्योंकि कानून और नीतियों का निर्माण यहीं होता है। स्त्री मुक्ति की अवधारणा के संदर्भ में स्त्री विमर्श जहां पितृसत्तात्मक व्यवस्था के षड्यंत्र को बेनकाब करता है।"5 वहीं वर्चस्ववादी पुरूष मानसिकता के खोखलेपन को भी उजागर करता है।

डॉ. ज्योति किरण ने ठीक ही कहा है- "जीवन संग्राम में शुरू से लेकर आखरी सांस तक स्त्रियां छली जाती रही हैं, जो स्त्रियों की कमजोरी होती है वही औजार बन जाते हैं। जो चीज स्त्रियों को अच्छी लगती है, वही बंधन बन जाती है ,जिसके लिए वह जान देती है, वह उसकी जान ले लेता है। प्रेम ,प्यार, सहानुभूति के आवरण में अमूमन स्त्रियां महफूज महसूस करती है लेकिन यह आवरण जब मुखौटा बन जाता है तब स्त्रियां भी कठपुतली बन जाती है। इच्छा ,आकांक्षा ,प्रेम ,प्यार ,सहानुभूति ,संवेदना कुछ ऐसे खेल है जो स्त्रियों के साथ हमेशा ही खेले जाते हैं। अपने परिवार के लिए, परिवार की सुख शांति के लिए नमक की तरह घुल जाने वाली स्त्रियों का एक लंबा काला इतिहास है जिसमें स्त्रियों की हर सांस सिसकी बन गई है।"6

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 1, (Jan-December 2021)

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में स्त्री-विमर्श को लेकर गहन जांच-पड़ताल की गई है। नारी शोषण के विविध प्रसंगों को उकेरती यह कहानियां संवेदनशील होने के साथ-साथ नारी जीवन के विविध सामाजिक ,राजनीतिक ,आर्थिक, धार्मिक,वैचारिक तथा व्यवहारिक स्तरों को उभारती हैं। भारतीय सामाजिक संघटना में परिवार सर्वोपरि है किंतु आज पारिवारिक ढांचे में बिखराव आया है। आधुनिक कहे जाने वाले समाज में संबंधों की नींव डगमगाने लगी है। आज पारिवारिक संबंधों की रीढ़ कही जाने वाली नारी अपने को सर्वाधिक असुरक्षित महसूस कर रही है। जन्म से लेकर मृत्यु तक पाबंदियों का दंश झेलती नारी कहीं भी तो सुरक्षित नहीं है ।अंजु दुआ जैमिनी की कहानी "वह लड़की "की प्रगति द्वारा अपने भाई पर हाथ उठाने पर मां द्वारा कहे गए निम्न शब्द लड़कियों के लैंगिक आधार पर किए जाने वाले भेदभाव को व्यक्त करते हैं- "लड़की होकर गुंडागर्दी करती है ।तमीज नहीं है ,भाई के साथ मारपीट करती है ।गुंडी कहीं की ।देख कितना मारा है इस बेचारे को ।" 7 इतना ही नहीं वह दिन रात शारीरिक मानसिक यंत्रनाओं को भोगने वाली मशीन बन गई है। मायके और ससुराल में उनकी भावनाओं की कोई कदर नहीं है । ससुराल में वह "तीन टाइम का खाना बनाने वाली बाई ,उसके बच्चे की देखभाल करने वाली आया, सास ननद की सेवा करने वाली नर्स और रात को देह तृप्ति करने वाली मशीन भर रह गई है ।"8 वर्तमान युग में नारी की स्थिति जानवरों से भी बदतर हो गई है ,उसकी स्थिति उस कुत्तिया की तरह है जो अनगिनत बच्चों को जन्म देती है।" जीवनदान "की धनवंती बच्चों को जन्म देती-देती थक जाती है और कहती है -"कभी-कभी खुद को कुत्तिया समझती थी जिसका काम सिर्फ बच्चे जनना था। औरत की जिंदगी है ही ऐसी ।लड़के के चक्कर में पांच बना दिए ।कैसे पार उतरेगा इन छोरियों का। "9 मर्द जाति के अत्याचार की शिकार नारी बेबसी एवं लाचारी का लबादा ओढ़कर सब कुछ को सहन करने को विवश हो जाती है।

डॉक्टर सुरेखा सिन्हा के शब्दों में -"औरत एक कठपुतली मात्र है। मर्द जब चाहे तब उसको सजाधजा कर, जहां मन हो नचा ले और जब चाहे निर्वस्त्र कर ले। औरत के मान - अपमान लाज शर्म आदि किसी भी बात का ख्याल केवल मर्द की खुशी और नाराजगी पर निर्भर करता है। मर्द खुश है तो औरत सिर आंखों पर और यदि नाराज हो गया तो पैरों तले कुचल दे।"10 हमारे सभ्य कहे जाने वाले समाज में लड़की को पराया धन मानकर शिक्षा ,स्वास्थ्य एवं रोजगार जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित किया जाता रहा है। अधिकारों की मांग के नाम

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 1, (Jan-December 2021)

पर उसे प्रताड़ना झेलनी पड़ती है। बंद चारदीवारी में सपनों के भरभरा कर टूटने का दंश केवल वह भोगती है ।जीवन में सीमित आवश्यकताओं की पूर्ति में ही पूर्णता का अहसास करने वाली नारी सम्मान की अधिकारी न होकर पग-पग पर लांछित एवं अपमानित होती है। "पन्ने जिंदगी के" कहानी की सुगंधा यह जानते हुए भी कि "पति के एक अन्य स्त्री से नाजायज संबंध है ,उसे तलाक न देने का फैसला करती है। उसके सामने अपने बच्चों के भविष्य की चिंता है। वह अपने बच्चों के भविष्य के लिए घुट -घुट कर जीने के लिए तैयार है। वह अपनी सहेली बेला को अपना फैसला बताते हुए कहती है-" तलाक !तलाक का अर्थ !आंखों में आंसू और अलगाव का बोझ ही तो होगा बेला ।संतति को समाज की नजरों में निरीह बना देता है तलाक ।परित्यक्ता की संतान को ओछी नजरों से देखते हैं लोग ।विद्रोही होते हुए भी शिल्पा के सैटल होने तक मैं परिवार से जुड़ी रहूंगी ।सुमंत को जोड़ने का अप्रत्यक्ष प्रयत्न करती रहूंगी। आजकल मारिया के कक्ष में जाकर उससे भी हंस बोल लेती हूं ,ताकि वातावरण सहज बना रहे ।पर वह बहुत चतुर है बेला। उसके खुले हाव भाव, उन्मुक्त व्यवहार सुमंत के लिए गहरा आकर्षण है। इस सारे घटनाक्रम को भाग्य का संयोग मानकर भूलने की कोशिश भी करती हूं। तुम तो जानती ही हो संस्कारों में बंधी मुझ जैसी महिला के लिए पति और परिवार ही सर्वस्व हैं।"11 इसी प्रकार कविता की कहानी "उस पार की रोशनी " मे वर्तिका तथा" मोर्चे "पर की स्वर्णा ऐसी नायिकाएं है जो परिवार में ही अभिशप्त है। पारिवारिक झगड़ों के कारण पलायन को मजबूर यह नारियां नरक का- सा जीवन भोगने को विवश है। सास -ससुर के सौतेले व्यवहार, पति की अनदेखी, जेठ -ननंद के ताने, पति की मारपीट ,दुर्व्यवहार आदि के कारण यह जीवन को अभिशप्त मान बैठी है। आधुनिक जीवन शैली में कामकाजी नारी विकट परिस्थितियों से जूझ रही है। वह घर और बाहर शोषण के निर्मम पाटों में पिस रही है। कहीं नौकरी पाने के लिए, कहीं पदोन्नति के लिए, तो कहीं स्थानांतरण के लिए, वह शोषण का शिकार है। घर से निकलने से लेकर लौटने तक अनेक संकटों और झंझटों का पिटारा पीठ पर लादे उसे पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन भी करना होता है। "वीकेंड का स्पेस " कहानी की रश्मि एक ऐसे ही पात्र है जो अपने बेहद व्यस्त कामकाजी जीवन में वीकेंड पर जो कुछ लम्हे फुर्सत पाती है तो उसे घर परिवार के काम में लगना पड़ता है। "पूरे सप्ताह ऑफिस में परफॉर्म करने के बाद मुझे घर में भी परफॉर्म करना पड़ता है।"12मुझे लगता है जैसे मेरी पेशी हो रही है ।इस संदर्भ में डॉक्टर प्रमिला कपूर लिखती हैं -"उन्हें अपने सारी आय पति अथवा सास-ससुर को देनी पड़ती

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 1, (Jan-December 2021)

है। और जहां औरतों ने अपने अर्जित धन पर अपना अधिकार जताने की कोशिश की वहां कलह उठ खड़ा हुआ, क्योंकि पति अथवा परिवार के दूसरे सदस्य उस बात के लिए बिल्कुल तैयार नहीं होते। उसी तरह नौकरी करने तथा परिवार का सदस्य होने के बावजूद भी उसे कहीं आने - जाने की स्वतंत्रता नहीं है। पति उसे अपने समकक्ष मानने के लिए तैयार नहीं है, तथा अपनी इच्छा अनुसार पति के साथ यौन संबंध करने को भी उसे स्वतंत्रता नहीं है ।न हीं उसके पति अथवा सास-ससुर उसका कोई विशेष ध्यान रखते हैं।13"आमतौर पर कामकाजी महिलाओं को प्रतिकूल वातावरण में काम करना पड़ता है । कार्यालयों में सहकर्मियों का अमैत्रीपूर्ण व्यवहार ,बॉस की गीदड़ भभकियां ,चपरासियों की अश्लील कानाफूसी ,रास्ते भर शोहोदों की बेशर्म फब्तियां ही तो उनके हिस्से की चीज है। महिलाओं के प्रति होने वाले अमानुषिक अत्याचारों में बलात्कार सबसे गंभीर समस्या है। बलात्कार की शिकार महिलाओं की कोई आयु निश्चित नहीं। प्रत्येक वर्ग की महिला किसी न किसी रूप में बलात बलात्कारी का शिकार बनती हैं। अमेरिका और अफ्रीका के बाद भारत ऐसा देश है जहां सबसे ज्यादा बलात्कार की घटनाएं घटित होती है । बलात्कार का दंश झेलने वाली इन महिलाओं की स्थिति को स्पष्ट करते हुए राजकिशोर लिखते हैं -"बलात्कार होता है दलित और आदिवासी लड़कियों के साथ ,खेतों में काम करने वाली भूमिहीन महिलाओं के साथ, घरेलू नौकरानी के साथ और रेलवे स्टेशनों और बस अड्डों के आसपास मंडराने वाली भिखारियों के साथ । इनमें से ज्यादातर जाति व्यवस्था के पायदान में सबसे नीचे होती हैं। इस आधार पर एक सामान्य सूत्र यह बनाया जा सकता है कि ब्राह्मण ,क्षेत्रीय या बनिए की पत्नी, बेटी या बहन अप्सरा हो तब भी उसके साथ बलात्कार की आशंका कम है और शूद्र या दलित की पत्नी, बेटी या बहन साधारण शक्ल -सूरत की हो ,अधेड़ हो, तब भी उसके साथ बलात्कार की आशंका ज्यादा है।"14 समग्रत: कहा जा सकता है कि भारतीय समाज में घर की चारदीवारी के भीतर पति को परमेश्वर मानकर गुजर-बसर करने वाली नारी आज उत्तर आधुनिक दौर में अनैतिक बंधन स्वीकार करने में तनिक भी परहेज नहीं मानती।

संदर्भ सूची:

ISSN: 2348 – 2605 Impact Factor: 5.659 Volume 9-Issue 1, (Jan-December 2021)

1.सुधा अरोड़ा, मन्नू भंडारी की चुनी हुई कहानियां, साहित्य भंडार-50,चाहचंद,इलाहाबाद-03,सं.2014,पृष्ठ.105

2.वही.पृष्ठ.113

3.डॉ. रोहिणी अग्रवाल ,कथाक्रम,खाटूश्याम प्रकाशन, रोहतक,पृष्ठ. 3

4.वही. पृष्ठ. 9

5.वही. पृष्ठ. 29-30

6.डॉ.ज्योति किरण,समकालीन कवयित्रियों की कविताओं में स्त्री मुक्ति के स्वप्न एवं संघर्ष, पंचशील शोध समीक्षा अक्टूबर-दिसंबर,2009,पृष्ठ. 59

7. अंजु दुआ जैमिनी ,क्या गुनाह किया,कल्यान शिक्षा परिषद, दरियागंज ,दिल्ली -2 पृष्ठ 79

8. अंजु दुआ जैमिनी, इस द्वार से उस द्वार ,मगध प्रकाशन, गाजियाबाद,9,सं2004,पृष्ठ 95

9.वही. पृष्ठ 12

10. डॉ. सुरेखा सिन्हा, उस धूप की छाह, साहित्य सागर, धामणी मार्किट की गली, चौड रास्ता जयपुर,सं-2011पृष्ठ 99

11. सावित्री रांका ,पन्ने जिंदगी के,रचना प्रकाशन, चांदपोल बाजार, जयपुर सं.2009, पृष्ठ 135

12. पंखुरी सिन्हा किस्सा- ऐ -कोहिनूर,भारतीय ज्ञानपीठ ,लोधी रोड़ ,दिल्ली-2008,पृष्ठ 28

13. प्रमिला कपूर ,कामकाजी भारतीय नारी,राजपाल एंड सन्स दिल्ली,1976 पृष्ठ 66-67

14. राजकिशोर ,स्त्री तुम्हारी जाति क्या है, हंस, राजेन्द्र यादव, अंसारी रोड़ दरियागंज, नई दिल्ली-2, नवंबर,2001 पृष्ठ 71.